प्रातःक्लास 16.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप हुआ बेहद का बाप। रूहानी बच्चे भी हुये बेहद के बच्चे। बाप को तो सभी बच्चों की सद्गति करनी है। किस द्वारा? इन बच्चों द्वारा विश्व की सद्गति करनी है। सारे विश्व के बच्चे तो नहीं पढ़ते हैं। नाम तो है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मुक्ति तो सभी क(ो) होती ही है। मुक्ति कहो जीवनमुक्ति कहो। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आना ही है। तो ऐसे ही कहेंगे सभी जीवनमुक्ति में आते हैं वाया शान्तिधाम। एक/दो पीछे आना ही है पार्ट बजाने। तब तक मुक्तिधाम में ठहरना पड़ता है। बच्चों को अभी रचयिता और रचना का पता पड़ गया है। यह सारी रचना अनादि है। रचयिता तो एक ही बाप है। यह जो सभी आत्माएं हैं सभी बेहद के बाप (के) बच्चे हैं। जब बच्चों को मालूम पड़ता है तो दोनों ही आकर योग सिखाते हैं। सभी तो नहीं सीखते हैं। यह भारत ... के लिए ही योग है। बाप आते (भ)ी भारत में हैं। भारत को ही याद की यात्रा सिखलाये पावन बनाते हैं और नॉलेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी बच्चे जानते हैं। रुद्रमाला भी है, जो गाई और पूजी जाती है। सुमिरण की जाती है। भक्त माला भी है। ऊँच ते ऊँच भक्तों की माला है। है तो सारी भक्ति माला। रावण की माला भक्ति की माला। रावण जभी आते हैं तभी ही सभी विकारों में जाते हैं। कोई काम विकार में जास्ती जाते हैं कोई कम। कोई विकार में नहीं जाते; परन्तु विकार से पैदा तो होते हैं ना। तो कहेंगे यह है रावण की माला। इस कल्प के संगमयुग के पहले जो भी हैं सभी हैं रावण माला। उसमें फिर भक्त माला भी है। भक्ति माला बाद फिर होनी चाहिए ज्ञान की माला। भक्ति और ज्ञान है ना। भक्तिमाल(ा) भी है। पीछे फिर रुण्ड माला भी कहा जाता है; क्योंकि ऊँच ते ऊँच मनुष्य सृष्टि में है विष्णु। जिसको सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। ल.ना. राज्य तो यहां ही करते हैं। तो कहेंगे विष्णु की रुण्ड माला भी है। प्रजापिता ब्रह्मा तो यह है। उनकी भी माला ज़रूर है। आखरीन यह माला बन जावेगी तब ही वह विष्णु की माला बनेगी। ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा। फिर ऊँच ते ऊँच है विष्णु का राज्य। यह त्रिमूर्ति जो दिखाया जाता है उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्रह्मा–विष्णु और शिव न कि शंकर; परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखें? तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव को ऊपर में रखा है। इससे शोभा भी अच्छी होती है। सिर्फ़ दो से शोभा न हो। नहीं तो वास्तव में शंकर का कोई पार्ट है नहीं। शंकर की माला नहीं कहेंगे। ब्रह्मा विष्णु की और रुद्र माला। बस। शंकर की कोई माला नहीं। जैसेकि उनका पार्ट ही नहीं। शोभा के लिए भक्तिमार्ग में कितने चित्र आदि बनाये हैं। ज्ञान तो कुछ भी नहीं जानते। तुम जो चित्र बनाते हो उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाये। शिव शंकर को मिला देते हैं तो जैसे कि उनका पार्ट है नहीं। यूँ तो बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन भी सारी सा. की बातें हैं। वहां तो कोई रह न सके। हड्डी–मांस तो वहां होता नहीं। सा. करते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है; परन्तु वह है सम्पूर्ण अव्यक्त। अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है उनको अव्यक्त बनना है। यह भी समझ में आता है। जिसको फरिश्ते भी कहते हैं। कहेंगे अव्यक्त फरिश्ते भी देखें तो सूक्ष्मवतन में चित्र रख दिये हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में कोई रह नहीं सकता। कुछ है नहीं। तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो, कहते हो सोमीरस पिलाया। अभी वहां तो झाड़ होती नहीं। वैकुण्ठ में हो सकती है। ऐसे भी नहीं वैकुण्ठ से ले आकर पिलाते होंगे। सभी सूक्ष्मवतन का सा. है। और कुछ है नहीं। समझो कोई क(ो) हनुमान, गणेश आदि सा. होता है, जो चित्र हैं उसका सा. होता है, बाकी ऐसे कोई गणेश, हाथी मिसल आदि है नहीं। भक्तिमार्ग में यह सभी जैसे खिलौने बनाये दिये हैं। तुम बच्चे तो जानते हो अभी हमको वापस जाना है और इसमें आत्माभिमानी भी बनाया जाता है। हम आत्मा अविनाशी हैं। आत्मा का भी ज्ञान बच्चों में हैं; परन्तु आत्मा क्या है वह नहीं जानते। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है; परन्तु आत्मा क्या है, कैसे उनमें 84 का पार्ट भरा हुआ है यह कुछ भी नहीं जानते।

यह नॉलेज बाप ही देते हैं। अपनी भी नॉलेज देते हैं। आत्मा का भी नॉलेज देते हैं। अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है ज़रूर। तुम यही कोशिश करते रहेंगे हम आत्मा हैं। अभी परमात्मा के साथ योग लगाना है। सर्वशक्तिवान पतित–पावन एक को ही कहते हैं। सन्यासी भी कहते हैं हे पतित–पावन आओ; परन्तु समझते कुछ भी नहीं। कोई तो ब्रह्म को भी पतित–पावन कह देते हैं। भक्तिमार्ग में सभी अनराइटियस बन जाते हैं। भक्ति का भी ज्ञान नहीं हैं। अभी तुम बच्चों को भक्ति का ज्ञान मिलता है। भक्ति कितना समय चलती है, ज्ञान कितना समय चलता है यह बाप बैठ समझाते हैं। पहले–2 तो कुछ भी नहीं जानते थे। गोया तुच्छ बुद्धि थे। किसकी तुच्छ बुद्धि कहेंगे? जनावरों की भी तो बुद्धि तो है ना; परन्तु मनुष्य होकर और तुच्छ बुद्धि बन पड़ते हैं तो जनावर से भी बदतर कहा जाता है। सतयुग में बिल्कुल ही स्वच्छ बुद्धि थे। कितने उन्हों में दैवीगुण थे। दैवी गुण भी ज़रूर धारण करनी है। कहते हैं यह तो जैसे देवता है। भल साधु–संत आदि को अक्सर करके मनुष्य लोग मानते हैं; परन्तु वह दैवी बुद्धि तो नहीं हैं। रजोगुणी बुद्धि कहेंगे। राजा–रानी और प्रजा है ना। राजधानी कब और कैसे स्थापन होती है यह दुनिया नहीं जानती हैं। यहां तुम सभी नई बातें सुनते हो तो माला का भी राज़ समझाया। ऊँच ते ऊँच है बाप। उनकी माला। ऊपर में है रुद्र वह है निराकार, फिर साकार ल.ना. उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी बनती नहीं। अंत में तो ब्राह्मणों की भी बन जाती है। जो फिर रुद्र की माला और रुण्ड माला बनती है। इन बातों में जास्ती प्रश्न–उत्तर करने की भी दरकार नहीं। पहले मूल बात है अपन को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा बाप को याद करना। अनेक प्रकार के नॉलेज हैं। फिर भी बाप कहते हैं इन बातों में जास्ती नहीं जाना है। तुम सिर्फ़ बाप को याद करो। यह निश्चय पक्का चाहिए। मूल बात है पतितों को पावन बनाना। मूलवतन में भी पावन है तो सुखधाम में भी पावन है। तुम पावन बनकर और पावन दुनिया में जाते हो। गोया पावन दुनिया की स्थापना हो रही है। सभी ड्रामा में नूँध है। बहुत प्रश्नों आदि की बात ही नहीं। तुम लोगों को क्रिश्चयन वा बौद्धियों आदि की नॉलेज तो चाहिए नहीं। उनके नॉलेज से इतना कोई सुख वा ऊँच पद नहीं पा सकते हैं; इसलिए बाप कहते हैं और सभी धर्मों की बातों को छोड़ दो। मुख्य बात है यह। जिससे फायदा होता है। कोई भी प्रश्न आदि .... नहीं निकालना चाहिए। जो जितना पढ़ते हैं उतना ऊँच पद पाते हैं। बाप कहते हैं सारी दिन का पोतामेल देखो। कोई भूल तो नहीं हुई व्यापारी लोग मुरादी सम्भालते हैं। यह भी कमाई है। तुम हरेक व्यापारी हो। बाबा से व्यापार करते हो। अपनी जांच करनी है हमारे में कितने दैवीगुण हैं। कितना बाप को याद करते हैं। कितना हम अशरीरी बन जाते हैं। हम नंगे आये थे ,फिर नंगे ही जाना है। सभी आते रहते हैं। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। जाना सभी को इकट्ठा ही है। भल सृष्टि खाली तो नहीं रहती है। गायन है ना राम गयो रावण गयो.....; परन्तु रहते तो दोनों ही हैं ना। रावण सम्प्रदाय जाते हैं तो फिर लौट नहीं आते हैं। बाकी यह बच जाते हैं। यह भी तुमको आगे चल कर सा. होना है। यह जानना है नई दुनियां की कैसे स्थापना होती है। पिछाड़ी में क्या होगा? फिर सिर्फ़ हमारा ही धर्म रह जावेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलयुग खत्म हो जावेगा। फिर सतयुग को आना है। अभी राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय दोनों ही हैं। संगमयुग पर ही यह सभी होते हैं। अभी तुम सभी को जानते हो। बाप कहते हैं बाकी जो कुछ राज़ है वह आगे चल कर धीरे–2 समझाते रहेंगे। बाप कहते हैं मैं भी तो हूँ ना। जो रिकॉर्ड में नूँध है वह खुलती जावेगी। तुम समझते जावेंगे।..... इन एडवांस कुछ नहीं बतावेंगे। तुम देवताएं बनते हो तो आसुरी सृष्टि का ज़रूर विनाश होगा। विनाश भी होने का है। कब होगा यह बाबा नहीं बतावेंगे। उनको मालूम हो तो बतावें। बाबा को यह ज्ञान नहीं कि विनाश कैसे होगा? यह तो ड्रामा का प्लैन है। रिकॉर्ड खुलता जाता है। बाबा

बोलता जाता है। तुम्हारी बुद्धि में सभी बातों की समझ पड़ती जाती है। रिकॉर्ड है ना। जैसे–2 रिकॉर्ड बजता जावेगा वैसे–2 बाबा की मुरली चलती जावेगी। ड्रामा का राज़ सारा अन्दर में है। ऐसे नहीं कि रिकॉर्ड से ऐसे उठाये बीच में रख वह रिपीट करावेंगे। नहीं। वह फिर भी वही रिपीट होगा। नई बात नहीं। बाबा के पास जो नई–2 प्वाइन्ट होगा वह रिपीट होगी। तुम सुनते और सुनाते जावेंगे। बाकी तो सभी है गुप्त। यह राजधानी स्थापन हो रही है। अलग–2 राजाई में तुम जन्म लेंगे। राजा–रानी, प्रजा सभी चाहिए ना। यह सभी बुद्धि से काम लेना पड़ता है। प्रैक्टिकल में जो होगा सो देखा जावेगा; परन्तु बुद्धि कहती है रत्नों को तो बचना ही है। किस घर में भी हैं बचते तो हैं ना। कोई कहेंगे गोल्डेन स्पून इन माउथ, ऐसे तो बहुत ही साहूकार हैं, सो तो जो यहां से बहुत साहूकार पास जाकर जन्म लेते हैं। अभी तुम्हारी वहां बहुत खातरी होगी। रत्न जड़ित चीज़ सभी के पास होते हैं। उनमें तो इनती पावर नहीं है। पावर तुम्हारे में है। तुम जहां भी जावेंगे वहां अपना शो करेंगे। तुम तो ऊँच बनते हो ना। तो तुम जाकर दैवी चरित्र दिखावेंगे। आसुरी बच्चे जन्म से ही रोते ..... गन्दे भी होते हैं। तुम तो बहुत ही कायदे सिरे निटनेंगे। गन्द आदि की कोई बात ही नहीं। आजकल के बच्चे तो कितने गन्दे हो पड़ते हैं। सतयुग में तो ऐसी बात हो न सके। फिर भी हैवेन है ना। गन्दगी की बात होती नहीं। यह तो खुशी की बात है ना। हम ऐसी दुनिया में जाते हैं जहां यह गन्दगी की बास आदि नहीं होती। वहां ऐसे भी नहीं कहेंगे कि अगरबत्ती जलाओ। बास होगी ही नहीं जो अगरबत्ती की दरकार रहे। बग़ीचे में ऐसी खुशबुएंदार फूल होंगी जो बात मत पूछो। यहां के फूलों में इतनी ताकत नहीं है ऐसी खुशबुएं देने की। वहां तो हरेक चीज़ में खुशबुएं रहती हैं। उनके भेंट में यहां तो 1% खुशबुएं हैं। वहां है 100% । अगरबत्ती भी फूल से बनती है ना। वहां फूल ही बड़े फर्स्ट क्लास होंगे। फूलों में फल, खुशबुएं होती हैं। सबसे फर्स्ट क्लास फूल सतयुग में होंगे। यहां भल कोई कितना भी साहूकार हो पर इतना नहीं। वहां तो किसम–2 की चीज़ें होंगी। बर्तन आदि भी सोने के होंगे जैसे यहां पत्थर हैं। वहां फिर सोना ही सोना। रेती में भी सोना होता है। विचार करो कितना सोना होगा। जिससे मकान बनते होंगे। ऐसी सफीयतें होंगी, जो न गर्मी, न ठंडी होगी। पंखे भी बहुत होते हैं। जब गर्मी होती है। वहां तो गर्मी का दुःख ही नहीं जो पंखे आदि हों। उसका तो नाम ही है स्वर्ग। हेवेन। वहां अपार सुख होते हैं। तुम्हारे जैसा पदमभाग्यशाली कोई बनते नहीं। ल.ना. की कितनी महिमाा गाते हैं। इन्हों को ऐसा जो बनाते हैं उनका तो पहले गायन है। पहले–2 होती ही है अव्यभिचारी भक्ति। फिर पीछे देवताओं की शुरू होती है। वह भी भूत पूजा कहेंगे। शरीर तो यह है नहीं। 5 तत्वों की पूजा हो जाती है। शिवबाबा के लिए तो ऐसे नहीं कहेंगे। पूजा करने लिए कोई चीज़ का .... आदि का बनावेंगे। आत्मा को थोड़े ही सोना कहेंगे। आत्मा किस चीज़ से बनी है? शिव का चित्र किस चीज़ से बनाया है झट बता देंगे। आत्मा–परमात्मा किस चीज़ से बना हुआ है वह कोई बता न सके। सतयुग में 5 तत्व भी शुद्ध होते हैं। यहां है अशुद्ध। तो पुरुषार्थी बच्चे ऐसे ख़्याल करते रहेंगे। बाबा कहते हैं इन बातों को भी छोड़ दो। जो होना है सो होगा। पहले तुम बाप को याद करो। चारों तरफ बुद्धियोग हटाकर मामेकं याद करो, विकर्म विनाश होंगे। जो भी सुनते हो वह सभी बातें छोड़कर एक बात पक्की करो। यह भी भल समझो; परन्तु पहले तो सतोप्रधान बनो तो बनो। फिर सतयुग में जो कल्प–2 होता है वही होगा। उस में फर्क नहीं पड़ सकता। मूल बात है बाप को याद करना। यह है मेहनत। वह तो पूरी करो। तूफान भी बहुत आते हैं। जन्म–जन्मांतर जो कुछ किया है वह सामने आवेंगे। तो सभी तरफ से बुद्धि योग हटा देना है। कोई भी तूफान आये उनको हटा कर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो अंतर्मुख होकर। स्मृति तो आती है बच्चों को। सो तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस से सभी मालूम होता जाता है। सर्विस कराने करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं उनके सर्विस का सबूत भी मिलता है।

पण्डे बन कितने को ले आते हैं। जो ऐसे सर्विस करते हैं उनको सर्विस का शो सबूत भी मिलता है। पण्डे बन कितने को ले आते हैं। कौन महारथी, घोड़े सवार प्यादे हैं वह झट पता पड़ जाता है। आपस में महारथी बैठते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। डिबेट करते हैं। बाबा को जो समझाना है उस पर तो डिबेट कर न सको। जो समझा चुके हैं उस पर ही तुम्हारी रूह–रूहानी(न) चलती है। बात तो बड़ी सहज है। तो तुमको डिफिकल्ट लगती है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने की डिफीकल्टी है। कहते हैं बाबा, माया योग तोड़ देती है। इसमें ही मेहनत है। मामेकं याद करो, बस। यह है याद की यात्रा का(की) सीढ़ी। सीढ़ी तो बहुत प्रकार के होते हैं। बच्चे जानते हैं हमारी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र हो जावेगी तो चले जावेंगे जिसको बारात कहा जाता है। आपस में हम भाई–2 हैं। भाई–बहन भी नहीं। कितने आपस में भाई–2 हैं। फिर सतयुग में कितने थोड़े रहेंगे तो पार्ट बजावेंगे। भाई–2 का अर्थ भी तुम्हारे बुद्धि में है । मनुष्यों को यह समझ नहीं है कि भाई किसको कहा जाता है। तुम अभी सीख रहे हो। हम वास्तव में भाई–2 हैं। आत्माएं आकर पार्ट बजाती हैं। बाप ने अपना परिचय और रचना का परिचय समझाया है। और कोई समझा न सके। न जानते ही हैं। तुम्हारी बुद्धि में रहता है। नॉलेज मिलती रहती है। टीचर है ही नॉलेज देने वाला। भक्तिमार्ग में समझते थे क्या बाप टीचर है , क्या नॉलेज सिखावेगे। न टीचर की बात, न नॉलेज की बात। दंत कथाएं सुनते थे। अभी प्रैक्टिकल में तुम पुरुषार्थ कर रहे हो आदि सनातन देवी–देवता बनने का। तुमको अथाह सुख है। बाप ने कहा है तुम्हारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म अथाह सुख देने वाला है। शान्तिवास तो बहुत ही करते हैं। उनकी कोई महिमा नहीं है। निराकारी दुनियां है। वहां तो कोई पार्ट नहीं। पार्ट यहां ही मिलता है। राज्य लेना और गंवाना। तुम राज्य लेते हो। तब ही तुमको महावीर कहा जाता है। महावीर मिसल अचल, अडोल रहना है। वह अवस्था हो जावेगी फिर तो कितने भी तूफान आवेंगे तुम हिलेंगे नहीं। सो भी जो पक्के महावीर होंगे। क्या ही अच्छा कीमती ज्ञान है। इनकी कोई कीमत नहीं रख सके। हां, खुशी का पारा ज्ञान से चढ़ता है। आत्मा को बड़ा सुख आता है। बाबा मिला है। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। फिर हम शान्तिधाम–सुखधाम में चले जावेंगे। सारा दिन बुद्धि में यही चलना है। यह तो बुद्धि में आता है। राजा बनते हैं तो ज़रूर अच्छे कर्म किये हैं। अभी तुम समझते हो वह रावण उल्टी कर्म कराते हैं। ईश्वर यह कर्म कराते हैं जिससे तुम कितना ऊँच बनते हो। उनको रावण मत कहा जाता है। एक/दो को कहते भी हैं तुम तो असुर हो। रावण हो। वही तो ऐसे कहते नहीं। अभी तुम बच्चों को दोनों तरफ का भी ज्ञान है। वहां तो एक ही प्रारब्ध होगी। न ज्ञान की बात, न भक्ति की बात। तो अभी और बातों को छोड़ दो। क्या होगा? माला कैसे बनी? कितने होंगे? वह बातें छोड़ दो। पहले तो मनमनाभव। योग की मेहनत करो। सभी को यही बताओ। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो मेरे द्वारा तुम सभी कुछ जान जावेंगे। और तो कोई बता भी न सके। सभी आत्माएं पार्ट में आ जाती हैं। बाकी एक बाप है जिसका फिर पार्ट ही अलग है। तुमको दुःख से छुड़ाने, योग की यात्रा सिखलाने का। वह भी पार्ट बजा रहे हैं। वह कब चक्र में नहीं आते। तुम सारे चक्र को जानते हो और सुनाते हो। कृष्ण भगवानुवाच तो है नहीं। वह तो कुछ भी जानते नहीं। तो मनुष्य बिचारे मूंझ कर कहां जायें? ज्ञान किसको कहा जाता है , भक्ति किसको कहा जाता है यह भी अभी तुम समझते हो। भक्ति से सीढ़ी उतरे आये हो। फिर बाप आकर एकदम ज़ोर से ऊँच चढ़ाते हैं। उसको कहा जाता है अचानक लॉट्री। मनुष्य समझते हैं ईश्वरीय लॉट्री है ज़रूर; परन्तु बहुत वर्ष दिखाने कारण मनुष्य अज्ञान अंधेरे में हैं। तुमको बेहद के सुख का लॉट्री मिलती है। घोड़ दौड़ होती है ना। यह भी आत्मा क(ी) (दौ)ड़ है। यह है हेम्युनिटी अश्व दौड़। ह्युमन भी नहीं कहें। आत्माओं की दौड़ है। एक्सीडेन्ट भी होती है। तुम कहेंगे बहुत अच्छा दौड़ता था। माया के कारण एक्सीडेन्ट हो गया। फारकती दे देते हैं। आत्मा फारकती देती है। बाबा बाबा कह फारकती। वह डायबोर्स देती है। ऐसे की संग न करना है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।